

छापामार ओपन एक्सेस घोषणापत्र Guerilla Open Access Manifesto

सूचना शक्ति है। लेकिन सब सत्ता की तरह, इसे रखना चाहते हैं कुछ लोग बस खुद के लिए। दुनिया के सारे वैज्ञानिक और सांस्कृतिक विरासत, प्रकाशित पुस्तकों और पत्रिकाओं में सदियों से, तेजी से डिजिटाइज्ड (digitized) और बंद किया जा रहा है निजी निगमों की एक मुट्ठी द्वारा। विशेषता पत्रों में पढ़ना चाहते हैं विज्ञान के सबसे प्रसिद्ध परिणाम? ऐसा करने के लिए भारी मात्रा में पैसे भेजने की आवश्यकता होगी रीड एल्सेविएर (Reed Elsevier) जैसे प्रकाशकों के पास।

इस अबस्था में बदलाव लेने के लिए कुछ लोग संघर्ष कर रहे हैं। ओपन एक्सेस आंदोलन (Open Access Movement) बहादुरी के साथ लड़ी है ताकि वैज्ञानिकों अपने सृष्टि के कॉपीराइट किसीको हस्तांतरित न करते हुए यह सुनिश्चित करें की उनके हर एक काम इंटरनेट पर प्रकाशित हो और सभी उनका लव ले सकें। लेकिन फिर भी सबसे अच्छा परिदृश्य के तहत, यह व्यवस्था उनके वाबिश्वा में की जाने वाली काम पे ही लागू होंगे। अब तक की गयी उनके हर काम इस व्यवस्था के बहार ही रह जायेंगे और गुम भी हो जायेंगे।

यह बहुत बरी कीमत होंगे। शिक्षाविदों को अपने सहकर्मियों के काम को पढ़ने के लिए मजबूरन रुपये देने परेंगे? पूरे पुस्तकालयों स्कैन (scan) किये जायेंगे लेकिन यह सब की लाभ उठाएंगे बस गूगल-वाले (folks at google) ही? प्रथम विश्व के अभिजात विश्विद्यालयों में ही केवल गवेशानापत्र उपोलाब्ध किया जायेगा और ग्लोबल साउथ (Global South) में नहीं? यह बेहद अपमानजनक और अस्वीकार्य हैं।

कई का कहना है, "मैं मानता हूँ" "लेकिन हम क्या कर सकते हैं? कंपनियों, कॉपीराइट पकड़ प्रयोग करके अपने लाभ के लिए भारी मात्रा में पैसे का चार्ज करते हैं, और यह पूरी तरह से है कानूनी -- हम उन्हें रोकने के लिए कुछ नहीं कर सकते हैं।" लेकिन हम कर सकते हैं ऐसा कुछ है, कुछ है कि पहले से ही किया जा रहा है: हम वापस लड़ सकते हैं।

छात्रों, पुस्तकालय, वैज्ञानिकों - - आपको इस जानकारी के डेटाबेस के संसाधनों की एक विशेषाधिकार दिया गया है। आप ज्ञान के इस भोज जबकि में फ्रीड करने के लिए मिलता है दुनिया के बाकी के बाहर ताला लगा है। लेकिन आप की जरूरत नहीं है की आप बस अपने आप के लिए यह सौभाग्य रखें, नैतिक रूप से यह आपकी कर्तव्य भी है की आप यह ज्ञान की भंडार सभी के लिए खोल दें। आप अपने सहयोगियों भीतर access passwords बांट सकते हैं और एकदूसरे के लिए download requests विवर सकते हैं।

इस बीच, जिन लोगों को इस ज्ञानभंडर से दूर रखा गया है वोह भी चुपचाप नहीं बैठ रहे हैं। आप अपना कोशिश जारी रखते हुए प्रकाशकों द्वारा बांध की गयी जानकारी खोल रहे हैं और उन्हें अपने दोस्तों में बाँट रहे हैं।

लेकिन यह सब कार्रवाई अंधेरे में होते हैं, चोरिचुपे। इसे चोरी या लूटपाट कहा जा सकता है, जैसे की इस ज्ञानभंडर को बाटना किसी जहाज को लूटकर उसकी सभी नाविकों को हत्या करने के बराबर हो।

लेकिन ज्ञान को बांटना नहीं है अनैतिक - यह एक नैतिकजरुरत है । केवल लालच में अंधे लोग ही मन करेंगे अपने दोस्तों को के वे इस ज्ञान की प्रतिलिपियाँ न बनायें ।

बड़े निगमों, जाहिर है, लालच से अंधे हैं । जिस कानूनों की तहत वे संचालित होते हैं उसकी आवश्यकता होती है की इससे कम होने पर शेयरधारकों का विद्रोह होगा । और जो कुछ राजनेताओं को वे खरीद लेते हैं वे कानून बनाकर इन प्रकाशकों को अनन्य अधिकार दे देते हैं प्रतिलिपि बनानेका ।

अन्यायपूर्ण कानूनों का पालन करने में कोई न्याय नहीं है । यह प्रकाश में आने का समय है और, सविनय असहयोग आन्दोलन की भव्य परंपरा में यह घोषणा करने का की सार्वजनिक संस्कृति की इस निजी चोरी और नहीं चलेगी ।

जहाँ भी जानकारी बांध हो, उसे खोल के सबके सामने लानेकी जरुरत है । कॉपीराइट सीमा के बहार अ चुके जितने भी सामग्री हो उन्हें अपने डेटाबेस में जोरने की जरुरत है । गुप्त डेटाबेस खरीदकर इन्टरनेट में दालने की आवश्यकता है । बैज्ञानिक पत्रिकाओं को डाउनलोड करके उन्हें फाइल शेयरिंग नेटवर्क्स (file sharing networks) में डालना है । हमें छापामार ओपन एक्सेस (Guerilla Open Access) के लिए लड़ना है ।

दुनियाभर की लोगों का साथ मिलने पर हम बस एक मजबूत संदेश ही नहीं भेजेंगे ज्ञान के निजीकरण के खिलाफ , परन्तु इससे विश्व को मुक्त करने में भी कामयाब होंगे । आप क्या हमारा साथ नहीं देंगे?

एरन स्वार्टज

Aron Swartz

जुलाई २००८ , इरेमो , इटली

July 2008 , Eremo , Italy